

एचएयू में किसानों हेतु ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से

हिसार, 15 जून (देवानंद) :

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहराल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं।

बाग लगाने से पूर्व मिट्टी व पानी की जांच ज़रूर करवाएं किसान : प्रो. काम्बोज

हिसार, 15 जून (राजकुमार) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की



मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

कि सान ऐसे लें मिट्टी के नमूने : मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष

डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल

**एवं यू कुलपति की सलाह,
बागवानी आय बढ़ाने में मददगार**

सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने

चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं।

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी : मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की ढलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने में सहायक सिद्ध होती है। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सुखा देते हैं, जो गलत है।

एवरेयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. काम्होज

धांय का व्यूज़

हिसार। चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बुलापात्र प्रोफेसर थे। और काम्होज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच पैज़ानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा

कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग खिना पैज़ानिक परामर्श के लागा लेते हैं, लेकिन समय आने पर ये उस बाग से वाढ़ित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में उत्पादक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन बहुमिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद्य य उत्पादकों द्वारा की जानी चाहिए। उत्पादकों की मात्रा का निर्धारण करने समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अपांचोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा का व्यान में रखना आवश्यक है।

किसान ऐसे लें मिट्टी के नमूने

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज बुमार शर्मा ने खाताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच अहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, आरीयता तथा लवण्यता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही छांग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने खरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। पैज़ानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गहरा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर



खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने खाताया कि पहला नमूना जमीन की सतह से 15 सें.मी., दूसरे 15 से 30 सें.मी., तीसरा 30 से 60 सें.मी., चौथा 60 से 90 सें.मी., पांचवां 90 से 120 सें.मी., छठा 120 से 150 सें.मी. और सातवां 150 से 180 सें.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लाभभग होना चाहिए। पैज़ानिकों ने खाताया कि यदि कोई कठोर या रोकी वजली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ करपड़े या पालिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर व्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

मृदा नमूने में साधारणी के साथ ये जानकारी भी जरूरी

मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर मिन्लिशियत जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खासगत नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साथन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की छालान एवं विस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट या खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने में सहायक सिद्ध होती है। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अभी छाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। उन्होंने कहा कि किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उत्पादक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें। नमूनों को खाद, राख या गोबर के संपर्क में न आने दें व नमूनों को उत्पादक वाले थोकों पर न रखें। उन्होंने कहा कि नमूनों को ह्या य छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या घूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं। किसान इस प्रशिक्षण से <http://meet.google.com/mmo-jgso-ikn> गुगल मीट लिंक से जुड़ सकते हैं।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से बांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा



की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। किसान ऐसे लें मिट्टी के नमूने मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार

शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह

एचएयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराईयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सें.मी., दूसरा 15 से 30 सें.मी., तीसरा 30 से 60 सें.मी., चौथा 60 से 90 सें.मी., पांचवां 90 से 120 सें.मी., छठा 120 से 150 सें.मी. और सांतवां 150 से 180 सें.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए।

एचएयू में किसानों के लिए
तीन दिवसीय ऑनलाइन
कपास प्रशिक्षण 21 जून से
हिसार : चौधरी चरण सिंह
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार में किसानों के लिए
ऑनलाइन माध्यम से तीन
दिवसीय कपास प्रशिक्षण
कार्यक्रम का आयोजन किया
जाएगा। यह जानकारी देते हुए
सायना नेहबाल कृषि प्रौद्योगिकी
प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के
सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ.
अशोक गोदारा ने बताया कि इस
प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन
माध्यम से गुगल मीट लिंक के
माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस
प्रशिक्षण के दौरान किसानों को
कपास उत्पादन की विभिन्न
तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे
में विस्तार पूर्वक जानकारी दी
जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में
भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-
सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से
दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच करवाएं किसान : कुलपति

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. कम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे

उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

एवण्ट्यू में किसानों के लिए ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए साबना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस

प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

पल पल न्यूज़: हिसार, 15 जून। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसानः प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूजः हिसार, 15 जून। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से बांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में अवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की

मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.

मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की



जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराईयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से

15 सै.मी., दूसरा 15 से 30 सै.मी., तीसरा 30 से 60 सै.मी., चौथा 60 से 90 सै.मी., पांचवां 90 से 120 सै.मी., छठा 120 से 150 सै.मी. और सातवां 150 से 180 सै.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

एवं यू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार | सिरसा टुडे

चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के

दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं।

किसान इस प्रशिक्षण से <http://meet.google.com/mmo-jgso-ikn> गुगल मीट लिंक से जुड़ सकते हैं।

बिना वैज्ञानिक परामर्श के फलदार पौधों के बाग न लगाएँ : कुलपति

हिसार/15 जून/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक

पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए

सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

हृषि में कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 से

हिसार, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए ऑनलाईन माध्यम से 21 जून से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाईन गूगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं : प्रो. काम्बोज

एचएयू कुलपति
प्रो. काम्बोज
बोले, बागवानी
आय बढ़ाने में
मददगार

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से बांधित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे

उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशेषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी

मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की छलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने में सहायक सिद्ध होती है। यदि खेत की मिट्टी में अंतर होता

नमूनों को साफ करपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें : प्रो. शर्मा

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अस्तीयता, क्षीरीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बासे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरापी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ करपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। से भी नमूना न लें। नमूनों को खाद, राख या गोबर के मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर संपर्क में न आने दें व न नमूनों को उर्वरक वाले बोरों पर खाद अभी डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले छेने रखें। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही लगाया गया हो। उन्होंने कहा कि किसान हाल ही में सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत धूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, (नित्य शक्ति टाइम्स) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में

आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग

लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए।

उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सें.मी., दूसरा 15 से 30 सें.मी., तीसरा 30 से 60 सें.मी., चौथा 60 से 90 सें.मी., पांचवां 90 से 120 सें.मी., छठा 120 से 150 सें.मी. और सातवां 150 से 180 सें.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईडीज़ भास्कर	१६-०६-२०२१	०३	३-५

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान: प्रो. बीआर कामोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रोफेसर बी.आर. कामोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से बांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उत्पादकों द्वारा की जानी चाहिए। उत्पादकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है, ताकि पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं। इसके लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओपर से आसानी से लिए जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गङ्गा खोदना चाहिए। उसके बाद सबसे 15, 30, 60, 90, 120, 150 और 180 सेटीमीटर सतह से 15 सेमी., दूसरा 15 से 30 सेमी., तीसरा 30 से 60 सेमी., चौथा 60 से 90 सेमी., पांचवां 90 से 120 सेमी., छठा 120 से 150 सेमी. और सातवां 150 से 180 सेमी तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अमर उजाला

दिनांक

16-06-2021

पृष्ठ संख्या

०२

कॉलम

०७-०८

बाग लगाने से पहले मिट्टी, पानी की जांच करवाएँ : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू के कुलपति ने किसानों
के लिए जारी की सलाह



हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएँ और उसी अनुसार बाग लगाएँ।

किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से बांछित लाभ नहीं ले पाते। क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए।

ऐसे लें मिट्टी के नमूने

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि पहला नमूना जमीन की सतह से 15 सेंटीमीटर, दूसरा 15 से 30 सेंटीमीटर, तीसरा 30 से 60 सेंटीमीटर, चौथा 60 से 90 सेंटीमीटर, पांचवां 90 से 120 सेंटीमीटर, छठवां 120 से 150 सेंटीमीटर और सातवां 80 सेंटीमीटर तक की गहराई अलग-अलग रख लेना चाहिए।

प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। यदि कोई कठीर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पालिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अथवा डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईन्डियन जागरण, पंजाब केसरी	१६-०६-२०२१	०५, ०५	१-२, ७-८

विज्ञानी कपास उत्पादन की तकनीकों से करवाएंगे रुबरू

जास, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में

किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

'ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से'

हिसार, 15 जून (पकेस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए 21 जून से ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
मैट्रिक ट्रिभ्युन	16-06-२०२१	०७	१-२

'मिट्टी, पानी की जांच कराएं किसान'

हिसार (निषा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन व्यासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। वैज्ञानिक बागवानी किसानों की आय बढ़ाने में मददगार साबित हो रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते, जबकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाल व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। मृदा विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	16-06-2021	01	01

mycity

न्यूज कैप्सूल

**ऑनलाइन कपास
प्रशिक्षण 21 से**

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम बिया जाएगा। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गूगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे न्यूज	16.06.2021	--	--

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुणल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

© 2013 iStock



सौंदर्य सरल विह हाईकोर्ट की विरोधीविधायक के कुनौती प्रोफेसर मी.आर. कल्पना ने यहां कि विषयालय वापर लकड़ी से फलों वेलस उत्तराधिकार लकड़ी के लिए विद्युत व चानों की जांच वैज्ञानिकों की सरबर अनुसन्धान वर्षाखण्ड और उमी अनुसन्धान वापर लकड़ी।

किसने को सरबर दी गई उत्तराधिकार विवर विषयालय वलडार पौरी के बाबा विवर वैज्ञानिक परामर्श के साथ दिये हैं। लैकिन सरबर अनेक पारे वेलस वापर से विभिन्न लकड़ी से पारे उत्तराधिकारी ने अपनायक वैज्ञानिक तकनीकी पूरी व होमेंट वापर उत्तराधिकार वापर विवर पाया है। इसलिए पौरी वैज्ञानिक तकनीकी को उत्तराधिकारी पूरी तारत व उत्तराधिकारी द्वारा की जानी चाहिए। उत्तराधिकारी की माज़ का निर्देशन



परंतु समय मिट्ठी की उपचार विधि तथा फलस द्वारा अवशेषित नियोग योग्य प्रक्रम तभी की भवति को लक्षण में रखना अवश्यक है।

मृदु विद्युत विधि के विपरीत व्यापक और व्यावर्तन तथा ने बहुत ज्ञान लक्षण में विद्युत मिट्ठी की जांच बहुत अचूट है तथा ज्ञान में बहुत ज्ञान स्वेच्छा कि विद्युत ज्ञान लक्षणों के विषय मर्ही है या नहीं। परीक्षण से मृदु की समस्याएँ जैसे अपवृद्धिक, अवैधिक तथा लक्षणों द्वारा दर्शाये जाए तो यह ज्ञान लक्षण है तो उपचार विधि के द्वारा नुसार दिये जा सकते हैं। विद्युत की जांच के विषय विद्युत के

नमूने खेत में सर्वों दूध में लिए जाने पड़ते हैं। बास के लिए निरुदी का नमूना लिये गए तरीकों परवाने के बजाए नियम के तरीके में अलग होता है। निरुदी के नमूने बहुत ज्यादा ओरेक्स से असंबोधी से लिये जा सकते हैं। बैंगनियों के अनुभव समझे चाहे 2 बैंगन वाला या 2 बैंगन बांटा जाए उसका असंबोध होता है। उसके बाद सब्जत से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तक 180 मैट्टेंड्रॉप की जांच करने पर बासों से नियम लगाने चाहिए। लौह नमूने लिये गए में असंबोध होता है। इसके बाद यह कि फलत वज्राय डम्पिन की मात्रा से 15 मी. तक दूरता 15 से 30 मी. तक ताकि 30 से 60 मी. तक 60 से

मात्र नम्बर में संख्याएँ ऐसे साथ दी जाती हैं कि उनकी

मूल के अन्य के तरह भी इसे लाने सुखाया जा सकता है। इसकी दो विधियाँ उपलब्ध हैं। इनमें से एक विधि यह है कि बाहरी विधि का उपयोग करके वास्तविक विषय का विश्लेषण करना। और दूसरी विधि यह है कि विषय का विश्लेषण करके उसकी विषयी विधि का विश्लेषण करना। इसकी विधि यह है कि विषय का विश्लेषण करके उसकी विषयी विधि का विश्लेषण करना।

अपना-अपना लोंगे दे लेंग चाहिए।
सुन वस्तु कोई को उत्तरांश दे ले दे
उक्त पर जोड़ रख अपनी बाजी ही वा
उक्त नेपाल राजा का फौजे हों तब वह
जाग हो। उक्तीले वह यि विवाह
दान हो ते भूमि सुनाक राजा वा
उक्तवाल उक्ते विवाह लाए दें ते
वस्तु वा ते वस्तुओं को वस्तु, राजा
वा विवाह के लोकों में वा उक्ते वा व
वस्तुओं को उक्तवाल ताके देंते वा व
देते। उक्तीले वह यि वस्तुओं को वह
वा विवाह में ही सुनाक चाहिए। वह
विवाह वस्तुओं को वही वालों का दृष्टि
में सुना देने ही, जो जान है।

90 मी.मी., लंबाई 90 से 120 मी.
मी., ऊँचाई 120 से 150 मी.मी. और
संतरण 150 से 180 मी.मी. तक की
प्रवाहिति से संबंधित अन्य-अन्य गुण
देखा जाता है। प्राप्तकर्त्ता अथवा
किसी दूसरे के सम्बन्ध में इन गुणों
परेशानीकों ने कहा कि “ईंट कोडे
कर्टोंगे या रोटोंगे वहीं पल पड़ेंगे मे-

आ जात के उसका नमूना अलग से
संकेत पात्र की गयाई और मोटाहर
नेट करने पड़ता है। नमूने नमूनों की
सहज काढ़ी पर लिखते हैं कि उन्होंने
में दूने और हर नमूने पर लिखते हैं
संकेत लगाया। संकेत पर नमूने की
गणना दियते व पक्के लेपेता बिनें के
अंदर रखी एवं पक्के भारत लाया है।